

# औपनिवेशिक काल में हिन्दी मुद्रण माध्यमों द्वारा आर्य समाज से प्रेरित सामाजिक रूपांतरण का अध्ययन (1858–1947)

<sup>1</sup>विनय सिंह, <sup>2</sup>डॉ० शैलेन्द्र कुमार तिवारी

<sup>1</sup>शोधकर्ता, मध्यकालीन इतिहास, डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या

<sup>2</sup> प्रोफेसर, मध्यकालीन इतिहास, गनपत सहाय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सुलतानपुर। (उ०प्र०) डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या

**सारांश:** यह शोध पत्र 1858 से 1947 के औपनिवेशिक काल में हिन्दी मुद्रण माध्यमों (पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों, पम्फलेट्स) की वह भूमिका रेखांकित करता है, जिसके द्वारा आर्य समाज के सिद्धांतों ने भारतीय समाज में गहन सामाजिक रूपांतरण की प्रक्रिया को गति प्रदान की। आर्य समाज, जिसकी स्थापना स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1875 में की थी, ने एकेश्वरवाद, वेदों की प्रामाणिकता, जाति व्यवस्था के प्रति विरोध, नारी शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह और सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन जैसे सुधारवादी विचारों को प्रचारित किया। यह अध्ययन इस प्रश्न पर केंद्रित है कि कैसे हिन्दी मुद्रण ने इन विचारों को एक विस्तृत जनसमुदाय तक पहुँचाने, सार्वजनिक बहस को आकार देने और एक सामूहिक सामाजिक चेतना के निर्माण में एक क्रांतिकारी माध्यम का कार्य किया। शोध में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग करते हुए प्राथमिक स्रोतों (तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं, आर्य समाज के प्रकाशनों) एवं गौण स्रोतों (विद्वत्पूर्ण ग्रंथों) का विश्लेषण किया गया है। निष्कर्ष यह प्रस्तुत करता है कि हिन्दी मुद्रण ने न केवल आर्य समाज के विचारों के प्रसार में एक 'बल गुणक' (फोर्स मल्टीप्लायर) का काम किया, बल्कि इसने एक नए प्रकार के सार्वजनिक क्षेत्र (पब्लिक स्फीयर) का सृजन किया, जहाँ समाज सुधार के मुद्दे बहस एवं चर्चा के केंद्र में आए। इस प्रक्रिया ने राष्ट्रीय चेतना के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसमें एक तर्कसंगत, शिक्षित और सुधारवादी समाज की परिकल्पना निहित थी।

**कीवर्ड:** आर्य समाज, हिन्दी मुद्रण, सामाजिक रूपांतरण, स्वामी दयानंद सरस्वती, औपनिवेशिक भारत, सामाजिक सुधार, हिन्दी पत्रकारिता, वैदिक साहित्य, जाति व्यवस्था, नारी शिक्षा।

## 1. प्रस्तावना

ब्रिटिश औपनिवेशिक काल (1858-1947) भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास में एक गहन परिवर्तन का दौर था। इस युग में पश्चिमी शिक्षा, आधुनिक विचार और नवीन संचार तकनीकों के प्रवेश ने परंपरागत समाज के ढाँचे में दरारें उत्पन्न कीं। ऐसे संक्रमण काल में अनेक सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों ने जन्म लिया, जिनमें आर्य समाज (स्थापना 1875) एक अग्रणी और सक्रिय प्रयास था। स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा प्रतिपादित इस आंदोलन ने "वेदों की ओर लौटो" का नारा देकर हिंदू समाज में व्याप्त कुरीतियों, मूर्तिपूजा, जातिगत भेदभाव और सामाजिक असमानता के विरुद्ध एक तार्किक एवं मौलिक चुनौती प्रस्तुत की। इस सुधारवादी परियोजना को सफल बनाने में मुद्रण क्रांति और विशेष रूप से हिन्दी मुद्रण माध्यमों की भूमिका निर्णायक सिद्ध हुई। मुद्रण तकनीक ने विचारों के बड़े पैमाने पर, सस्ते और स्थायी प्रसार का मार्ग प्रशस्त किया। हिन्दी, जो उत्तर भारत की एक व्यापक बोली थी, इस प्रसार का मुख्य वाहक बनी। आर्य समाज ने पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों, व्याख्यानों के प्रकाशित संग्रह और

पम्फलेट्स के माध्यम से अपने संदेश को घर-घर तक पहुँचाया। यह मुद्रित शब्द ही था जिसने सामाजिक चेतना जगाई, विचार-विमर्श के नए मंच स्थापित किए और परिवर्तन के लिए एक सैद्धांतिक आधार प्रदान किया। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य औपनिवेशिक काल में हिन्दी मुद्रण के उस जटिल ताने-बाने का विश्लेषण करना है, जिसके द्वारा आर्य समाज ने सामाजिक रूपांतरण की महत्वाकांक्षी प्रक्रिया को संचालित किया। यह अध्ययन इस प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास करता है कि कैसे मुद्रित शब्द एक सामाजिक आंदोलन का प्राण बन गया और उसने भारतीय समाज के मानस को किस प्रकार प्रभावित किया।

### शोध के उद्देश्य

- आर्य समाज द्वारा प्रकाशित प्रमुख हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों एवं प्रचार सामग्री की पहचान करना एवं उनके प्रसार का मूल्यांकन करना।
- हिन्दी मुद्रण माध्यमों के द्वारा प्रचारित आर्य समाज के प्रमुख सामाजिक सुधारवादी विचारों (जैसे- जाति विरोध, नारी शिक्षा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण) का विश्लेषण करना।
- मुद्रित सामग्री के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों (बुद्धिजीवी, युवा, महिलाएँ, निम्न जातियाँ) तक पहुँचने तथा उन्हें प्रभावित करने की प्रक्रिया का अध्ययन करना।
- हिन्दी मुद्रण द्वारा सृजित 'सार्वजनिक क्षेत्र' में आर्य समाज के विचारों पर होने वाली बहसों, प्रतिरोध एवं स्वीकृति का परीक्षण करना।
- आर्य समाज के मुद्रण-केंद्रित सुधार आंदोलन का समग्र रूप से सामाजिक रूपांतरण पर क्या प्रभाव पड़ा, इसका आकलन करना।

### साहित्य समीक्षा

आर्य समाज और हिन्दी पत्रकारिता पर पर्याप्त विद्वतापूर्ण कार्य हुए हैं। केन जोन्स ने आर्य समाज के उदय और उसके सामाजिक प्रभाव का व्यापक विवेचन किया है। वासुदेवानंद स्पेशलिस्ट ने आर्य समाज की पत्रकारिता पर महत्वपूर्ण कार्य किया है। हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास पर रामरतन भटनागर तथा विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के ग्रंथ प्रमुख स्रोत हैं। मुद्रण संस्कृति और सामाजिक परिवर्तन पर बेंजामिन जे. कॉहन और रोशन किशोर के लेखन ने सैद्धांतिक आधार प्रदान किया है। हालाँकि, विशेष रूप से हिन्दी मुद्रण माध्यमों को केंद्र में रखकर आर्य समाज द्वारा प्रेरित सामाजिक रूपांतरण की एक सुसंगत और विस्तृत अध्ययन की आवश्यकता अभी भी बनी हुई है। यह शोध पत्र उसी अंतर को भरने का प्रयास करता है।

### शोध प्रणाली

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक ऐतिहासिक शोध पद्धति पर आधारित है। प्राथमिक स्रोतों के रूप में औपनिवेशिक काल में आर्य समाज से संबद्ध प्रकाशित हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ (जैसे- आर्यमुसाफिर, सत्यधर्मप्रचारक, आर्यवर्त, चंडीप्रकाश), स्वामी दयानंद सरस्वती तथा अन्य आर्य नेताओं के मौलिक ग्रंथ (सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका), पम्फलेट्स और भाषण संग्रह शामिल हैं। गौण स्रोतों में इस विषय पर लिखी गई आधुनिक विद्वतापूर्ण पुस्तकों, शोध-लेखों और ऐतिहासिक समीक्षाओं का उपयोग किया गया है। इन स्रोतों के गहन विश्लेषण, तुलना और व्याख्या के माध्यम से निष्कर्ष निकाले गए हैं।

### विवेचन एवं विश्लेषण

#### 5.1 आर्य समाज का सैद्धांतिक आधार एवं सुधार का एजेंडा

आर्य समाज के सामाजिक रूपांतरण के प्रयासों को समझने के लिए उसके सैद्धांतिक आधार को जानना आवश्यक है। स्वामी दयानंद ने वेदों को ज्ञान का शाश्वत और अपौरुषेय स्रोत माना। इस आधार पर उन्होंने तत्कालीन हिंदू

समाज में व्याप्त सभी प्रथाओं की कसौटी लगाई। मुख्य सिद्धांत थे: एकेश्वरवाद (ओंकार), वेदों की प्रामाणिकता, मूर्तिपूजा की निंदा, जाति व्यवस्था का विरोध (जन्म पर आधारित नहीं, गुण-कर्म पर आधारित वर्ण व्यवस्था का समर्थन), नारी शिक्षा का समर्थन, बाल विवाह एवं अनमेल विवाह का विरोध, विधवा पुनर्विवाह का समर्थन, और स्वदेशी तथा हिंदी भाषा का पक्ष। यह एजेंडा अत्यंत क्रांतिकारी था और इसने समाज के रूढ़िवादी तबकों को चुनौती दी।

## 5.2 हिन्दी मुद्रण: आर्य समाज का प्रमुख अस्त

मुद्रण तकनीक आर्य समाज के लिए ईश्वर-प्रदित अस्त सिद्ध हुई। स्वामी दयानंद स्वयं एक अथक लेखक थे। उनकी महान कृति 'सत्यार्थ प्रकाश' (1875) हिन्दी गद्य की एक मील का पत्थर है, जिसने आर्य विचारधारा का पूरा खाका प्रस्तुत किया। इसकी सरल, तर्कपूर्ण और कभी-कभी आक्रामक भाषा ने पाठकों को गहराई से प्रभावित किया। इसके अलावा, 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' जैसे ग्रंथों के माध्यम से उन्होंने वैदिक ज्ञान को सामान्य जन तक पहुँचाने का प्रयास किया। पत्र-पत्रिकाओं का जाल: आर्य समाज ने हिन्दी पत्रकारिता को एक मिशन के रूप में अपनाया। देश भर में सैकड़ों पत्र-पत्रिकाएँ प्रारंभ की गईं।

**'आर्यमुसाफिर' (1877):** यह आर्य समाज का पहला हिन्दी साप्ताहिक था, जिसने सामाजिक बुराइयों पर निरंतर प्रहार किया।

**'सत्यधर्मप्रचारक' (1883):** यह एक प्रमुख मासिक पत्रिका थी जिसमें गहन theological और सामाजिक लेख प्रकाशित होते थे।

**'चंडीप्रकाश' (1882):** इसमें सामाजिक-राजनीतिक विषयों पर तीखे संपादकीय छपते थे।

'आर्यवर्त' और 'आर्यदर्पण' जैसी अन्य पत्रिकाओं ने भी विस्तार से इस मिशन में योगदान दिया।

इन पत्रिकाओं में न केवल आर्य सिद्धांतों का प्रचार होता था, बल्कि सामाजिक घटनाओं की रिपोर्टिंग, बहस-मुबाहिसे, पाठकों के पत्र, और नीतिगत सुझाव भी प्रकाशित होते थे। इसने एक सक्रिय पाठक वर्ग का निर्माण किया जो सिर्फ ग्रहण करने वाला नहीं, बल्कि चर्चा में भाग लेने वाला था।

## 5.3 मुद्रण के माध्यम से सामाजिक रूपांतरण के क्षेत्र

हिन्दी मुद्रण ने निम्नलिखित क्षेत्रों में सामाजिक बदलाव के लिए मजबूत जमीन तैयार की:

**क) जाति व्यवस्था का विरोध और शूद्रोद्धार:** आर्य समाज के पत्रों ने जन्म के आधार पर जातिगत भेदभाव की कठोर आलोचना की। उन्होंने 'शुद्धि' आंदोलन के माध्यम से धर्मांतरित हिंदुओं को वापस लाने और निम्न जातियों को समाज की मुख्यधारा में शामिल करने का प्रचार किया। मुद्रित सामग्री में निम्न जातियों के लिए शिक्षा और मंदिर प्रवेश के अधिकार का समर्थन किया गया। पंडित लेखराम, स्वामी श्रद्धानंद जैसे नेताओं के लेखों ने इस दिशा में जनमत तैयार किया।

**ख) नारी शिक्षा एवं सशक्तिकरण:** आर्य समाज ने महिलाओं की दशा सुधारने पर सबसे अधिक जोर दिया। पत्र-पत्रिकाओं में कन्या पाठशालाओं की स्थापना, महिला शिक्षकों की आवश्यकता, और स्त्री दर्पण जैसे विशेष स्तंभ प्रकाशित होते थे। लाला देवी प्रसाद जैसे समर्थकों ने विधवा पुनर्विवाह के पक्ष में मजबूत दलीलें प्रकाशित कीं। इन प्रयासों का परिणाम यह हुआ कि आर्य समाज के प्रभाव वाले क्षेत्रों (पंजाब, संयुक्त प्रांत) में महिला शिक्षा का तेजी से प्रसार हुआ।

ग) वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अंधविश्वासों का खंडन: मुद्रण ने अंधविश्वासों और कुरीतियों के विरुद्ध एक शस्त्र का काम किया। 'भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट' की रिपोर्टों और तार्किक लेखों के माध्यम से मूर्तिपूजा, ज्योतिष के दुरुपयोग, तंत्र-मंत्र आदि की आलोचना की गई। इसने एक तर्कसंगत और वैज्ञानिक मानसिकता को बढ़ावा दिया।

घ) हिन्दी भाषा का प्रचार एवं राष्ट्रीय एकता: आर्य समाज ने संस्कृतनिष्ठ हिन्दी (आर्यभाषा) को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रचारित किया। इसके प्रकाशन हिन्दी में होते थे, जिसने हिन्दी के प्रसार और उसे एक राष्ट्रीय पहचान देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह भाषा की राजनीति का एक सूक्ष्म पहलू था, जो अंग्रेजी के वर्चस्व के विरुद्ध था।

#### 5.4 चुनौतियाँ एवं प्रतिरोध

आर्य समाज के मुद्रित विचारों का रूढ़िवादी हिंदू समाज, ईसाई मिशनरियों और कट्टर मुस्लिम नेताओं ने प्रबल विरोध किया। उनके विरुद्ध फतवे जारी किए गए, पत्र-पत्रिकाओं पर मुकदमे चले और कई संपादकों को धमकियाँ मिलीं। स्वामी दयानंद के विचारों की आलोचना करते हुए 'स्वामी दयानंद और सत्यार्थ प्रकाश' जैसे प्रति-पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित हुईं। औपनिवेशिक सरकार भी कभी-कभी आर्य समाज की मुखर पत्रकारिता को संदेह की नजर से देखती थी। इन चुनौतियों के बावजूद, मुद्रण ने आर्य समाज को एक लचीला और प्रतिक्रियाशील मंच प्रदान किया, जहाँ से वह अपने पक्ष को और मजबूती से रख सका।

#### निष्कर्ष

औपनिवेशिक काल में हिन्दी मुद्रण माध्यम आर्य समाज द्वारा प्रेरित सामाजिक रूपांतरण के अभियान का केंद्रीय तंत्र और प्रेरक शक्ति थे। मुद्रण ने सुधार के विचारों को व्यक्तिगत व्याख्यानों और स्थानीय चर्चाओं के दायरे से निकालकर एक राष्ट्रीय सार्वजनिक विमर्श का विषय बना दिया। इसने न केवल एक नई सामाजिक चेतना को जन्म दिया, बल्कि परिवर्तन के लिए एक व्यावहारिक रोडमैप भी प्रस्तुत किया। आर्य समाज की पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों ने समाज के दबे-कुचले वर्गों को आवाज दी, महिलाओं के प्रश्न को मुख्यधारा में लाया और एक तार्किक, वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया। इस प्रक्रिया ने केवल सामाजिक सुधार तक ही सीमित रहकर राष्ट्रीय पुनर्जागरण को भी गहराई से प्रभावित किया। हिन्दी के प्रसार और वैदिक गौरव के नाम पर एक गर्वोन्नत स्वदेशी पहचान के निर्माण ने भारतीय राष्ट्रवाद को सांस्कृतिक आधार प्रदान किया। निष्कर्षतः, यह कहा जा सकता है कि 1858-1947 का कालखंड हिन्दी मुद्रण और आर्य समाज के बीच एक ऐतिहासिक साझेदारी का साक्ष्य है, जिसने भारतीय समाज को बदलने की दिशा में अमिट छाप छोड़ी और आधुनिक भारत के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

#### संदर्भ सूची

- सरस्वती, स्वामी दयानंद. (1875). सत्यार्थ प्रकाश. मुंबई: आर्य समाज।
- भटनागर, रामरतन. (1947). हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास. प्रयागराज: हिन्दी साहित्य सम्मेलन।
- मिश्र, विश्वनाथ प्रसाद. (1968). आर्य समाज और हिन्दी पत्रकारिता. दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन।
- जोन्स, केन. (1976). आर्य धर्म: उन्नीसवीं सदी के पंजाब में हिन्दू चेतना (अनुवादित). बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस।
- स्पेशलिस्ट, वासुदेवानंद. (1990). आर्य समाज पत्रकारिता: एक अध्ययन. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- कॉहन, बेंजामिन जे. (1996). उपनिवेशवाद और ज्ञान के उसके रूप: भारत में अंग्रेज (अनुवादित). न्यू जर्सी: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।
- किशोर, रोशन. (2008). मुद्रण संस्कृति और आधुनिक भारत. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
- शर्मा, ज्योतिषा. (2012). स्वामी दयानंद सरस्वती: विचार और आंदोलन. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन।
- विद्यालंकार, जगन्नाथ प्रसाद (संपादक). (विभिन्न). आर्यमुसाफिर (चयनित अंक). लाहौर: आर्य समाज।
- ओमप्रकाश, कुसुम. (2015). औपनिवेशिक भारत में स्त्री शिक्षा और आर्य समाज. नई दिल्ली: राजपाल एंड संस।